ग्लेशियर से

मृदुला गर्ग

ग्लेशियर से

कहानी

मृदुला गर्ग

मिसेज़ दत्ता अकेली ताजीवास ग्लेशियर की तरफ़ जा रही हैं। ताजीवास ग्लेशियर है। सब गाइड किताबों में लिखा है, है। इतने सारे लोग उसे देखने सोनमर्ग आए हैं। इसलिए... ज़रूरी है.... कि है ... पर... दिखलाई नहीं दे रहा...

दिखलाई जो दे रहा है, बिल्कुल साफ़ दिख रहा है, वह है, आसमान को छू रहे हरे पहाड़ों की चोटियों पर पुता सफ़ेद रंग। बस में आते हुए रास्ते में ही दिख गया था।

'बर्फ़, वह देखो बर्फ़', मिस्टर दत्ता ने अपनी सीट से कहा था।

'बर्फ', सीट नम्बर चौदह ने खँखार कर कहा था। 'बर्फ', सीट नम्बर तेईस ने किलककर कहा था। 'बर्फ', सीट नम्बर दो और तीन ने इकट्ठा कहा था। मिसेज़ दत्ता ने देखा था, पहाड़ों की चोटियों पर सफ़ेदी जमी है। हाँ, वह बर्फ़ है...होनी तो चाहिए।

पहाड़ों पर बर्फ़ होती है।

बर्फ़ सफ़ेद होती है।

बर्फ़ ठण्डी होती है, बेहद ठण्डी... बर्फ़ की तरह।

वे जानती हैं।

नहीं, जानती नहीं। उन्होंने पढ़ा है, ऐसा होता है, सुना है, ऐसा है। देखा नहीं तो जाना क्या ?

दूर बर्फ़ है। बर्फ़ दूर है। पर मरीचिका की तरह नहीं। चन्द क़दम चल लेने पर पास आ जाएगी... पैरों के नीचे। ताजीवास ग्लेशियर सिर्फ़ दो मील दूर है। मिसेज़ गुप्ता, मिसेज़ सोनी, मिसेज़ लाल उस पर चल सकती हैं तो मिसेज़ दत्ता क्यों नहीं ? मिसेज़ दत्ता हर वह काम कर सकती हैं जो मिसेज़ बत्रा, मिसेज़ सोनी, मिसेज़ सिंह करती हैं। अपने-अपने दायरे के भीतर आदमी एक-दूसरे के बराबर होता है !

पर...मिसेज़ दत्ता तो अकेली ग्लेशियर जा रही हैं।

मिस्टर दत्ता ने कहा था, आज टूरिस्ट बँगले में आराम करेंगे, कल सुबह ग्लेशियर देखने चलेंगे... जल्दी क्या है ?

तीन बजे वे टूरिस्ट बँगले पहुँच गए थे।

चार बज रहे थे....

ग्लेशियर दो मील दूर है... ग्लेशियर सोलह घण्टे दूर है...मिसेज़ दत्ता को मिस्टर दत्ता के साथ ग्लेशियर देखने जाना चाहिए... मिसेज़ दत्ता को अकेले घूमने की आदत नहीं है...

पाँच बज गए....

मिस्टर दत्ता चाय का तीसरा प्याला पी रहे हैं... मिसेज़ दत्ता दूसरा पी कर तृप्त हैं....आँखें मूँदे आराम कर रही हैं... कल ग्लेशियर चलेंगे.... ग्लेशियर पन्द्रह घण्टे दूर है... ठीक है.... बात-बात पर बेताब होने की मिसेज़ दत्ता की आदत बरसों पहले छूट चुकी....

साढ़े पाँच बजने लगे...

ऐसा भी होता है कि तोहफ़े पर चढ़े झीने काग़ज़ को उघाड़ने मैं डर लगता है और तोहफ़ा... मिसेज़ दत्ता को ख़ुद से डर लगता है...काग़ज़ झीना है पर एक के ऊपर एक, बेहिसाब, न जाने कितनी परतें हैं, कब तक कोई उतारे ? मिसेज़ दत्ता को मिसेज़ दत्ता बने रहने की आदत है...

छह शायद बजे नहीं...

एकाएक हवा को न जाने क्या हो गया।

हू-हू कर रोती हुई बदहवास उठी और चीड़ के घने दरख़्तों से टकराकर सिर धुनने लगी।

मिसेज़ दत्ता की आँख खुल गई। क्या हुआ ? यह हवा को क्या हो गया !

वे उठ कर खड़ी हुईं कि हवा आकर उनकी छाती से लिपट गई। गले में पड़े दुपट्टे ने अड़चन पैदा की तो खींचकर उसे दूर फेंक दिया। चीड़ के दरख़्त की तरह चौड़ा उनका सीना नहीं है... बिलखती हवा को संभालें कि दुपट्टा...

आदतर मिसेज़ दत्ता दुपट्टे के पीछे चल दीं और दौड़ने पर मजबूर हो गईं। हवा पागल हो चुकी थी, मिसेज़ दत्ता को दौड़ने की आदत न थी, फिर भी कुछ बदहवासी के बाद दुपट्टा हाथ आ गया। पर हवा का बिलखना न रुका। वे खड़ी रहीं पर चीड़ के दरख़्त झुक गए। शाखें झुकतीं और धक्का खाकर सीधी हो जातीं,